मांगड़ के. नटेसन

संगीत नाटक अकादेमी अमृत पुरस्कारः
कर्नाटक गायन संगीत

MANGAD K. NATESAN

Sangeet Natak Akademi Amrit Award:
Carnatic Vocal Music

केरल के मांगड़ में 13 सितंबर 1933 को जन्मे, श्री मांगड़ के. नटेसन ने अपने पिता जी. कुमारन और पी. एन. लक्ष्मीकुट्टी से कर्नाटक गायन का प्रशिक्षण प्राप्त किया। श्री नटेसन ने सन् 1958 में तिरुवनंतपुरम के स्वाति तिरुनल कॉलेज ऑफ म्यूजिक से गणभूषणम का पाठ्यक्रम पूरा किया।

समृद्ध और सशक्त आवाज के धनी, श्री नटेसन बहुप्रशंसित कलाकार हैं। आपने बहुत से छात्रों को कर्नाटक संगीत का प्रशिक्षण भी दिया है। आपकी पहचान एक ऐसे गायक की है जो अपने सम्प्रदाय का कड़ाई से पालन करता है, मनोधर्म का उपयोग करता है जो राग के मूल भाव से समझौता नहीं करता, सर्वलघु स्वरों का उपयोग करता है, और गुरुओं द्वारा निर्धारित संगति के साथ कृतियों की प्रस्तुति करता है। आपने पूरे देश में आयोजित होने वाले प्रमुख उत्सवों, सभाओं, मंदिरों, रेडियो और टीवी पर अपनी प्रस्तुतियाँ दी है। महाराजा स्वाति थिरुनल की रचनाओं का आपका भंडार विशाल है और महाराजा की रचनाओं को प्रचारित करने का आपका प्रयास भी उल्लेखनीय है। आपकी प्रस्तुतियों में चलक्कुडी नारायण स्वामी, थिरुप्परक्कडल वीरराघवन, टी. के. वी. रामानुजाचार्युलु, सी. आर. मणि अय्यर, बी. शशिकुमार, गुरुवयूर दोराई और पलक्कड़ टी. आर. राजमणि जैसे कई दिग्गजों ने आपके साथ संगत किया है। आपने आकाशवाणी और दूरदर्शन के राष्ट्रीय कार्यक्रमों और संगीत सम्मेलनों में प्रस्तुतियाँ दी है।

कर्नाटक गायन संगीत के क्षेत्र में योगदान के लिए आपको केरल संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार (1989); केरल संगीत नाटक अकादमी फेलोशिप – कलारत्न (2014); संगीत कला आचार्य – संगीत अकादमी, चेन्नई (2014); और केरल सरकार द्वारा स्वाति पुरस्कार (2015) से सम्मानित किया गया है।

कर्नाटक गायन संगीत में योगदान के लिए श्री मांगड़ के. नटेसन को संगीत नाटक अकादेमी अमृत पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

Born on 13 September 1933 in Mangad, Kerala, Shri Mangad K. Natesan took his training from his father G. Kumaran and from P.N. Lakshmikutty. Shri Natesan completed Ganabhooshanam in 1958 from Swati Tirunal College of Music at Thiruvananthapuram.

Endowed with a rich and powerful voice, Shri Natesan became a well-acclaimed performer who has trained many students. Strict adherence to sampradaya, use of *manodharma* - which is uncompromising in the essence of the raga, use of sarvalaghu swaras, and rendition of kritis with sangatis as perfected by the masters are his hallmarks. Shri Natesan has performed all over the country in major festivals, sabhas, temples, radio and television. His repertoire of the composition of Maharaja Swathi Thirunal is vast and his efforts to propagate the Maharaja's compositions are noteworthy. He has been accompanied in his performances by many of the stalwarts such as Chalakkudi Narayana Swami, Thirupparkkadal Veeraraghavan, T.K.V. Ramanujacharyulu, C.R. Mani Iyer, B. Sasikumar, Guruvayoor Dorai, and Palakkad T.R. Rajamani. He has performed in the National Programmes of All India Radio and Doordarshan and at sangeet sammelans.

For his contribution in the field of Carnatic music, Shri Mangad K. Natesan has been honoured with the Kerala Sangeetha Nataka Academy Award (1989); Kerala Sangeetha Nataka Academy Fellowship - Kalaratna (2014); Sangeetha Kala Acharya - Music Academy, Chennai (2014); and Swathi Puraskaram by the Government of Kerala (2015).

Shri Mangad K. Natesan receives the Sangeet Natak Akademi Amrit Award for his contribution to Carnatic vocal music.